वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 64	Year 6	Volume 12	September 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

गुरू और ईश्वर

पुराने समय से हमारे वैदिक धर्म में या जो साम्प्रदाय भारत व ा में ही जन्में उन सब में गुरू का स्थान बहुत आदरणीय रहा है। वेदों में माता पिता के बाद गुरू का ही स्थान है। गुरू से यह अपेक्षा की जाती है कि जो ज्ञान वह शास्त्रों से या फिर दूसरी योग व अध्यात्मिक विद्याओं से प्राप्त करता है वह अपने शिष्यों व श्रधालुओं के साथ बांटे क्योंकि अक्सर संसारिक कार्यो में व्यस्त रहते हुये आम व्यक्ति के पास शास्त्रो या फिर दूसरी योग व अध्यात्मिक विद्याओ को पढ़ने जानने का समय नहीं होता। जैसा कि हम जानते हैं गुरू संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है अन्धकार को मिटाने वाला। इसलिये सच्चा गुरू वही है जो कि सूर्य की तरह अज्ञान के अन्धेरे का मिटा कर प्रकाश फैला दे।

अक्सर देखा गया है, लोग जब किसी दुविधा या मुश्किल में होते हैं, तो गुरू से यह अपेक्षा करते हैं कि वह उन्हे रास्ता दिखाये। जब महाभारत के युद्ध के शुरू होने से पहले, अर्जुन को मोह माया के जाल में फंसकर, यह समझ नहीं आ रही थी कि वह क्या करे तो भगवान श्री कृष्ण ने उन्हे रास्ता दिखा कर कर्तव्य का बोध करवाया । यह है गुरू का अपने श्रधालुओं के प्रति कर्तव्य। परन्तु गुरू व श्रद्धालुओं के बीच का यह सुन्दर सम्बन्ध उस समय बिगड़ जाता है जब गुरू मिथ्या अभिमान से चूर, सोचता है कि लोग मुझे ही भगवान मान ले। इस इच्छा से वशिभूत वह अपने आप को अनुयाइयों के आगे भगवान सिद्ध करने के लिये जादू, टोणे व सिद्धियों का सहारा लेता है। अध्यात्मिकवाद द्वारा मोक्ष का रास्ता दिखाने के स्थान पर वह उन्हें भौतिकवाद व मायावाद का रास्ता दिखा कर माया के बन्धन में और जकड़ देता

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
 # 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

है। कहां उदेश्य तो था मोक्ष प्राप्ति और बना दिया गया भौतिक वसतुओं के पीछे भागना। इस लिये यह बहुत आवश्यक है कि हम गुरू और ईश्वर के फर्क को समझें।

हमारे वेद व दूसरे धार्मिक ग्रन्थ यह बताते हैं कि ईश्वर एक है जो कि सारी सृष्टि, प्राणीयों, फल फूल वनस्पित को बनाने वाला है। जब प्राणी को बनाने वाला ईश्वर है तो प्राणी ईश्वर का स्थान कैसे ले सकता है। जब हम मनुष्य को ही ईश्वर का स्थान दे देते है तो न केवल भूल करते हैं बल्कि बहुत बड़ा पाप भी इसका फल यह होता है हम ऐसे गलत गुरू के जाल में फसं कर धोखा खा जाते हैं और यह अक्सर होता हैं। एक बात स्पष्ट है कि जब ईश्वर सब जगह विराजमान है और अपने आप में ही परिपूर्ण है ऐसे में ईश्वर अपने ऐजेन्ट; ;ये सब बाबा , बापू, स्वयं को भगवान कहने वालों को क्यों रखेगा। ऐजेण्ट रखने की बात तो तब आये जब वह सब जगह न हो और सब कार्य काने के समर्थ न हो। न ही अनादि होने के कारण नश्वर शरीर में प्रवेश करेगा जैसा कि यह बाबा आदि अपने आप को ईश्वर ही बताते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती, गुरू विरजानन्द के साथ

दूसरी महान गलती हम तब करते हैं जब कर्मफल के सिद्धान्त को भूल कर हम इन गुरूओं का पल्लु पकड़ते हैं। कर्मफल के सिद्धान्त यह कहता है ——हम अच्छा कर्म करेंगें तो फल अच्छा होगा, और यदि हमारा कर्म गन्दा है ं तो फल भी खराब होगा। खराब कर्म के फल को किसी भी गुरू की छत्र छाया कम नहीं कर सकती। है। श्री राम और सीता को वनवास काटना पड़ा, यही नहीं जब रावण के साथ युद्ध में लक्ष्मण मूर्छित हो जाते है तो श्री रामचन्द्र विलाप करते हुये कहते हैं————न जाने पिछले जन्म में मैने कौन से बुरे कर्म किये थे जिस कारण यह बुरा समय मुझे देखना पड़ रहा है। ईश्वर न्यायकारी है और वह सब को उनके कर्मो का उपयुक्त फल देता है। इन कर्मो को भोगे बिना खत्म करने की किसी के पास भी चाबी नहीं, चाहे आप किसी नदी में डुवकी लगायें या दान पुण्य करे या किसी भगवान के नाम की अंगुठी पहने । हा, इन अच्छे कर्मो का अच्छा फल आपको अलग रूप में मिलेगां । यदि आम व्यक्ति इस कर्म फल के सिद्धान्त को समझ जाता है तो इन ढोंगी बाबो के चक्कर में न आये। जो भी लोग इन बाबों के चक्कर में पड़े हुये मिलते है उन में 90 प्रतिशत किसी जादू की पुड़िया के लालच में आते हैं जो कि उन के दुख को दूर कर देगी।हां यह अवश्य है कि एक अच्छा गुरू आपको ठीक रास्ते पर रखेगा ताकी आपके कर्म अच्छे ही हों। यह सोचना कि गुरू कर्म के फल को कम या ज्यादा कर देगा, कर्मफल के सिद्धान्त को चुनोती देने वाली बात है।

लोभ, मोह के बशीभूत हमारी गलत ईच्छाऐ भी इन बाबों के पापने का कारण है।। अच्छी सम्तान हो यह तो ठीक इच्छा है पर मेरे घर में पुत्र ही हो गलत ईच्छा है, हो भी सकता है नहीं भी हो सकता है, नहीं होना तो किसी बाबा की आर्शीवाद के बाद भी नहीं होगा और होना है तो बाबा के चंगुल में फसे बिना भी हो जायेगा। इसी तरह अगर आप सही रास्ते पर चलते हुये परिश्रम कर रहे हो सफलता मिलेगी अगर नहीं मिल रही तो उसी क्षेत्र में किसी अनुभवी के पास जायें और उस से सलाह मशबरा करें । बाबा इस में क्या करेगा। पर हम ठीक सलाह या ठीक रास्ते के आदि नहीं और न ही मनन करना चाहतें है। हमें तो कोई जादू की छड़ी चाहिये जो यह बाबे ही दे सकते है। इस बाबा रहीम को अपना ही पता न था कि वह केस हारेगा या जीतेगा तो यह दूसरों की नईया पार क्या लगायेगा

यह स्पष्ट है कि एक अच्छे गुरू का कर्तव्य है कि वह उसके मानने वाले अनुयाईयों को अच्छे बुरे का ज्ञान देकर ठीक रास्ते पर डाले पर यह तभी सम्भव है जब हम ठीक गुरू का चुनाव करें। ठीक गुरू वही है जो ज्ञानी, धार्मिक व विद्वान होने के साथ—साथ काम, लोभ, क्रोद्ध, मोह व अहंकार से उपर उठा हुआ हो, उसका जीवन सादगी का हो, झूठ और असत्य से घृणा करता हो, चका चोंध से दूर रहता हो, नाम व मशहूरी उसकी

कमजोरी न हो।

जब व्यक्ति घड़ा लेने जाता है तो उसे ठोक पीट कर देखता है, अगर ठीक लगे तभी लेता है तो जो गुरू जीवन का मार्ग दिखाने के लिये धारण करना है उसे ठोक पीट कर देख लिया जाये तो उसमें हर्ज कैसा? इस बारे में सन्त दादू के जीवन से एक बहुत सुन्दर घटना है

एक आर सन्त दादू किसी नये स्थान पर चले गये व नगर से दूर किसी विरान जगह पर ठहर गये। ज्यों–ज्यों लोगों को पता चला त्यों त्यों वे उस विरान जगह पर आकर ही प्रभु भक्ति का अमृत पीने लगे।

शहर के कोतवाल को जब पता चला कि दादू नाम क सन्त आये हुये हैं तो उस के मन में भी आया कि चल कर उस महात्मा के दर्शन करने चाहिये। अपने घोड़े पर चड़कर कोतवाल महोदय दादू सन्त को मिलने चलपड़े। काफी दूर आ गये पर कोतवाल को दादू सन्त न दिखाई दिये। आगे कुछ दूर जाने पर एक दुबला पतला व्यकित दिखाई पड़ा जिसने केवल एक लगोंटी पहन रखी थी। वह मार्ग की झाडियों को काट कर फैंक रहा था ताकि मार्ग साफ हो जाये। कोतवल ने उसके पास जाकर पूछा––''अरे ओ भिखारी! तुझे पता है दादू सन्त कहां रहते हैं?''

उस व्यकित ने कोतवाल की और देखा पर बोला नहीं। कोतवाल ने समझाा यह बहरा है, चिल्लाकर बोला, ''अरे मूर्ख! मैं पूछता हूं दादू कहां रहता हैं?''

इस बार उस व्यक्ति ने कोतवाल की तरफ देखा भी नहीं और अपना काम करता रहा।

कोतवाल को क्रोध आया। जिस चाबुक से वह घोड़े को चलाता आया था उसी से उस व्यक्ति को मारने लगा। चाबुक से उस व्यकित के शरीर पर निशान पड़ गये पर तब भी वह व्यक्ति न बोला। क्रोधित होकर कोतवाल ने चाबुक का डण्डा उस व्यकित के सिर पर दे मारा और चिल्लाकर कहा–––'' क्या तू हां या नहीं में

उत्तर नहीं दे सकता? परन्तु वह व्यकित फिर भी न बोला। उसके सिर से रक्त वह रहा था पर इसका कोतवाल पर कोई असर न था। कोतवाल ने सोचा जो व्यक्ति इतना कुछ होने पर भी न बोला वह ज़रूर गूंगा बहरा आर पागल है, और वह आगे निकल गया। कुछ दूर जाने पर एक और व्यक्ति मिला। कोतवाल ने उस व्यक्ति को रोक कर उस से भी दादू का पता पूछा।

'आपको इसी मार्ग पर पीछे दिखाई नहीं दिये, मैं तो अभी उन से मिलकर आया हूं। वह झाड़ीयां काट रहे थे ताकी इस मार्ग पर आने वालों को मुश्किल न हो''–––उस व्यक्ति ने कहा।

केतवाल ने आश्चर्य से मुंह फाड़कर कहा,–––'' उस लंगोटी पहने दुबले पतले की बात तो नहीं कर रहे,''

''हां, वही तो हैं महात्मा दादू। आपने शायद उनकी और ध्यान नहीं दिया'' वह व्यक्ति बोला ।

कोतवाल ने जल्दी से घोड़ा मोड़ा व वापस उस व्यक्ति के पास पहुंचे, जिसे शरीर पर अव भी चाबुक के चिन्ह थे और सिर पर पटटी बांध ली थी। ''क्या आप ही सन्त दादू हैं?'' कोतवाल बोला।

वह व्यक्ति मुस्कराया व कोतवाल को देख कर धीमें से बोला––––'' इस शरीर को दादू भी कहते हैं।''

कोतवाल जल्दी से घोड़े से उतरा, उनके पैरों में गिर पड़ा। दुखःभरी आवाज में बोला,–––'' क्षमा कर दो महाराज! मैं तो आपको गुरू धारण करने आया था।''

दादू ने उसे प्यार से उठाया और बोले–––'' तो फिर यह दुख किस लिये? व्यक्ति जब घड़ा लेने जाता है तो उसे ठोक पीट कर देखता है, अगर ठीक लगे तभी लेता है तो जो गुरू जीवन का मार्ग दिखाने के लिये धारण करना है उसे ठोक पीट कर देख लिया तो उसमें हर्ज कैसा? थोड़ी देर बैठो। मैं यह झाड़ी परे फैंक लूं, फिर बैठकर बाते करेगें। ये झाड़ीयां और इनकं कांटे मार्ग चलने वालों को बहुत कष्ट देतें हैं।

जिस व्यक्ति में –––तप,त्याग, धैर्य, सहनशीलता,सेवा भाव, सन्तोष, विनम्रता जैसे गुण हों। जिसे लोभ, अंहकार, क्रोध व मोह छूने न पाए और सब से वड़ी बात जिसका आचरण ही संदेश देता हो, उसे ही गुरू धारें। अगर ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता है तो अच्छी पुस्तकों को ही गुरू मानकर उनका स्वाध्याय करें। गुरू गोविन्द साहब ने इसी लिये गुरू ग्रन्थ साहब को ही अन्तिम गुरू मानने का आदेश दिया।

कहते हैं एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती लाहोर में जब एक आर्य समाज में पहुंचे तो हवन हो रहा था। स्वामी जी को देखते ही सभी आदर भाव से अपनी अपनी जगह पर खड़े हो गये। स्वामी जी ने सब को बिठा दिया व हवन जारी रखने को कहा। हवन खत्म हो गया तो स्वामी जी सब को सम्भोदित करते हुए बोले–––जब आप उस सृष्टि के रचइता की भक्ति में लीन हैं तो मैं तो क्या चाहे कोई राजा ही क्यों न आए, आपको अपनी भक्ति को नहीं छोड़ना चाहिए। चाहे मैं हू या कोई राजा, उसको बनाने वाला वह प्रभु ही है, हम उस प्रभु से अधिक सम्मान के हकदार कैसे हो सकते हैं। ऐसा व्यक्ति जब गुरू के रूप में मिल जाये तो

जीवन का सही रास्ता अवशय मिलेगा।

एक बातं का सदैव ख्याल रखें–– कोई व्यकित कितना भी ज्ञानी है पर अगर अपनी जरूरत के लिये धन होने के बावजूद भी दक्षिणा व धन की इच्छा करता है और मांगता है तो वह गुरू बनने लायक नहीं। इस बात का पता आपको थोड़े समय में लग सकता है।

एक बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मनुष्य का अज्ञान ही इन बावों के पनपने का कारण है ।आर्य समाज जैसी संस्थाऐं जो किसी समय ऐसे अज्ञान को दूर करने के लिये बनी थी आज स्वयं कर्मकाण्ड और अन्धविश्वास का गढ़ हैं। जहां कभी मुददे थे एक निराकार ईश्वर की उपासना, अन्धविश्वासों और जातिवाद के विरुध युद्ध, अच्छे आचरण के लिये कटिबध रहना, वहां के आकर्षन है––भजन संध्या, योगा, संस्कृत प्रचार, बड़े बड़े हवन, विवाह संस्कार और एक दूसरे के अभिन्दन। ऐसे में इन ढोंगी बाबों को खुली छूट है।

*****

Guru comes first

The late Nani Palkhivala, once recalling a meeting in New York that was attended by Indian political dignitaries. 'C Subramanian prefaced his talk by mentioning the Swamis first and the Vice-President later. He explained for the benefit of the Western audience that according to our ancient culture, the man of God came first and the man who had attained worldly distinction came later!' The likes of Ram Rahim are bringing disrepute to the name of 'guru'. Vivekananda had observed: 'Shall India die? Then from the world all spirituality will be extinct, all moral perfection will be extinct.

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

विपति की घड़िया में ही व्यक्ति के अध्यात्मिक होने की परीक्षा होती हैं

महर्षि दयानन्द को उनके विरोधियों ने जहर दे दिया था। जहर उनके शरीर में फैल चुका था और सारा शरीर जहर के धब्बों से छलनी था। महर्षि दो महीने से इसी हालत में थें पर उनके चुहरे की चमक में कोई कमी न थी। न ही किसी से शिकायत थी, न ही बदले की भावना। सदैव की तरह तय समय पर ईश्वर की भक्ती करते। जब दिपावली का दिन आया तो उन्होने अपने देह को त्यागने का निश्चय किया। आसपास भक्त खड़े थे उनसे अपने प्रिय मंत्र विश्वानी देव सवित्र का जाप करने के लिये कहा । फिर ईश्वर तेरी ईच्छा पूरी हो कह कर प्राण त्याग दिये।

महात्मा बुद्ध के सामने से अंगुली मान डाकू खड़ा था, जिसके नाम से ही लोग कांपते थे। बुद्ध बिना किसी भय के चले जा रहे थे। अंगुली मार ने कहा रूक जाओ। बुद्ध ने जवाब दिया ———मैं तो रूक गया पर तू कब रूकेगा। खुखार डाकू अंगुली मार कांपने लगा और बुद्ध के चरणों में गिर गया। अब बात करते हैं आज के एक अध्यात्मिक बाबा गुरमीत राम रहीम की———जज ने अभी सजा सुनानी थी और वह कांप रहा था। जब सजा सुना दी तो वहीं फर्श पर लेट कर रोने लगा और जज साहब से माफी की भीख मांगने लगा। जेल में गया तो अपने बच्चों जैसे व्यवहार से दूसरें कैदियों के लिये भी सम्सया बन गया यदि इस बाबा में कुछ भी अध्यात्मिक होता तो इस का व्यवहार ऐसा न होता।कसूर गुरमीत का नहीं , कसूर है उनका जिन्होने भरे जवानी में उसे धर्म गुरू मान लिया। गुरमीत की आयु उस समय 23 साल थी। अध्यात्मिक शिाक्षा के बिना सब धन दौलत उसे विलासिता की और ले गये। जो कि किसी के साथ भी हो सकता है। अध्याम्तवाद की आसान पहचान है ———त्यागमय ढंग से जीवन को जीना, संसार की सब वस्तुओं को ईश्वर का मान कर चलना, करूणा और संवेदनशीलता होना।

गुरू न भी मिले कोई बात नहीं अगर निम्न बातों को जीवन में धारन कर लें।

1 ईश्वर एक ही है। केवल गुणों के आधार पर हम उसे अलग अलग नाम से पुकारते है।

2 इस संसार की हर वस्तु ईश्वर की है, जो कि मानव के प्रयोग के लिये है।। ऐसा मानकर चलें और त्यागभाव से भोंगे। इनके साथ जुड़ न जायें अर्थात मेरा मेरा न कहें। श्री कृष्ण ने इसी बात को गीता में इस तरह कहा है

3 धर्म वही है जो एक व्यक्ति को दूसरे प्राणियों से प्यार करना सिखाये । ईश्वर उन्ही को प्यार करता है जो कि उसके प्राणियों से प्यार करता है। ईश्वर तक पहुंचने का सब से सुगम उपाय है ——मानव सेवा। बिना सेवा के ज्ञान खोखला है।

4 मानवता से उपर कोई जाति या धर्म नहीं। अपनी साम्पर्दायिक पहचान को महत्व देने के लिये, मानवता को न भूलें।

5 दुनिया में सब से बड़ा कानून कर्मफल का है। जैसा हमारा कर्म होगा वैसा ही फल होगा, अच्छे कर्म का अच्छा फल और बुरे कर्म का बुरा फल। हमारे पाप भोग कर ही खत्म होते है न कि किसी की कृपा से या नदियों में डुवकी लगाने से या दुर्गम स्थानों पर जाने से। ईश्वर न्यायकारी है उस की व्यवस्था में यह कर्मफल का उचित न्याय होता है। यह बहुत उचित कहा है————मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता, जैसे कर्म करेगा कोई वैसा ही फल पाता।

7 ईश्वरिय गुणों को धारण करना ही ईश्वर भक्ति है———जैसे कि दया, करूणा, उचित न्याय, सेवा भाव को जीवन में लाना। ईश्वर की भक्ति आपको आत्मिक शक्ति देती है।

जो व्यक्ति सब कर्मो को परमात्मा को अपर्ण करके और आसक्ती को त्यागकर कर्म करता है वह व्यक्ति जल में कमल के पते की भान्ति पाप मे लिप्त नहीं होता। कहने का तात्पर्य यह है कि संसार के सब पदार्थों को त्यागमय भाव से भोगें पर इनके साथ आसक्त न हों

*****

Honesty is a virtue which is respected everywhere

A successful businessman was growing old and knew it was time to choose a successor to take over the business. Instead of choosing one of his Directors or his children, he decided to do something different. He called all the young executives in his company together. He said, "It is time for me to step down and choose the next CEO. I have decided to choose one of you. "The young executives were Shocked, but the boss continued. "I am going to give each one of you a SEED today - one very special SEED. I want you to plant the seed, water it, and come back here one year from today with what you have grown from the seed I have given you. I will then judge the plants that you bring, and the one I choose will be the next CEO."

एक सफर में पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री और उनकी पत्नी ललिता शास्त्री। यह यात्रा के दौरान भी दफतर का काम किया करते थे।

One man, named Jim, was there that day and he, like the others, received a seed. He went home and excitedly, told his wife the story. She helped him get a pot, soil and compost and he planted the seed. Everyday, he would water it and watch to see if it had grown. After about three weeks, some of the other executives began to talk about their seeds and the plants that were beginning to grow.

Jim kept checking his seed, but nothing ever grew Three weeks, four weeks, five weeks went by, still nothing. By now, others were talking about their plants, but Jim didn't have a plant and he felt like a failure.

Six months went by -- still nothing in Jim's pot. He just knew he had killed his seed. Everyone else had trees and tall plants, but he had nothing. Jim didn't say anything to his colleagues, however, he just kept watering and fertilizing the soil - He so wanted the seed to grow.

A year finally went by and all the young executives of the company brought their plants to the CEO for inspection. Jim told his wife that he wasn't going to take an empty pot. But she asked him to be honest about what happened. Jim felt sick to his stomach, it was going to be the most embarrassing moment of his life, but he knew his wife was right. He took his empty pot to the board room.

When Jim arrived, he was amazed at the variety of plants grown by the other executives. They were beautiful - in all shapes and sizes. Jim put his empty pot on the floor and many of his colleagues laughed, a few felt sorry for him! When the CEO arrived, he surveyed the room and greeted his young executives. Jim just tried to hide in the back. “Wow, what great plants, trees and flowers you have grown," said the CEO. "Today one of you will be appointed the next CEO!" All of a sudden, the CEO spotted Jim at the back of the room with his empty pot He ordered the Financial Director to bring him to the front. Jim was terrified.. He thought, "The CEO knows I'm a failure! Maybe he will have me fired!" **When Jim got to the front, the CEO asked him what had happened to his seed, Jim told him the story.** The CEO asked everyone to sit down except Jim. He looked at Jim, and then announced to the young executives, "Behold your next Chief Executive Officer! His name is "Jim!" Jim couldn't believe it. Jim couldn't even grow his seed. "How could he be the new CEO?" the others said. Then the CEO said, "One year ago today, I gave everyone in this room a seed I told you to take the seed, plant it, water it, and bring it back to me today. But I gave you all boiled seeds; they were dead - it was not possible for them to grow. All of you, except Jim, have brought me trees and plants and flowers. When you found that the seed would not grow, you substituted another seed for the one I gave you. Jim was the only one with the courage and honesty to bring me a pot with my seed in it. Therefore, he is the one who will be the new Chief Executive Officer!"

*****

यदि हम इबराहिम की तरह नौकरी करें तो भारत भी चीन जैसा समृद्ध और शक्तिशाली देश बन जाये

यह कहानी आर्यसमाज में पुलिस इंसपैक्टर रिटायर्ड श्री ओम वीर ने सुनाई और मुझे बहुत अच्छी लगी

उत्तर प्रदेश प्रान्त में एक जमिंदार, जिसके कि कई शहरों में आम के बागिचे थे, ने इबराहिम नाम के व्यक्ति को एक शहर में अपने बागिचे की रखवाली के लिये नौकरी पर रख लिया। उस बागिचे में बाहर शुरू के कुछ पेड़ ऐसे थे जिन में कि खटटे आम पैदा होते थे और बाकी पेड़ों के आम मीठे होते जो कि बिक्री के लिये शहर भेज दिये जाते।

इबराहिम को नौकरी करते कई वर्ष हो गये थे । एक दिन जमीदार ने एक व्यक्ति कोइबराहिम के पास यह कहलाकर भेजा कि वह बाग मे से तीन आमों के टोकरे उसके खास मेहमान के लिये उस व्यक्ति के पास भेज दे। इबराहिम ने तीन टोकरे बना कर उस व्यक्ति को मालिक को देने के लिये दे दिये। मालिक ने टोकरे देखने के लिये खोले तो देखा कि वे तो आचारी आम थे। उसने अपना माथा फोड़ा और इबराहिम को अपने पास बुला भेजा। इबराहिम को देख कर मालिक गुस्से मे बोला ––तुझे पांच साल नौकरी करते हो गये पर तुझे आचारी आम के पेड़ों और दूसरे पेड़ों में फर्क मालुम नहीं हुआ। देख तूने मेरे विशेष मेहमान के लिये सारे खटटे आम भेज डाले है।

इबराहिम हाथ जोड़कर बोला––––मालिक मेरा काम बाग की रखवाली करना है ताकी कोई बाहर का व्यक्ति अन्दर न आ सके। मैने यह कभी जानने की कोशिश ही नहीं कि कोन से पेड़ के आम खटटे हैं और कोन से आम के मीठे। आप का आदेश आया तो मैने एक पेंड़ से तीन टोकरे बना कर भेज दिये।

जमीदार लगातार बात सुनते हुये इबराहिम को देखे जा रहा था, उसकी आखें इबराहिम की ईमानदारी और कर्तव्य के प्रति निष्ठा को देखकर भर गई थी, उन्होने इबराहिम को बहुत सा ईनाम देकर भेज दिया। पिछले 50 वर्षो में जो सब से बड़ा फर्क हमारे देश में आया है वह यही है कि आज इबराहिम जैसे व्यक्ति ढूंढे भी नहीं मिलते। बिना मेहनत किये व्यक्ति रातों रात कार से लेकर सब सुख प्राप्त करना चाहता है। आप सरकारी नौकरी के लिये इतनी मारधाड़ क्यों देखते है? क्योंकि उन्हे लगता है कि सरकारी नौकरी में बिना मेहनत किये भी जीवन भर के लिये नौकरी पक्की है।

सब से अधिक फर्क मैं गांवों में देखता हूं। कोई समय था कि गांव के व्यक्ति सीधे, परिश्रमी और इमानदार होते थे पर आज सब कुछ उलट गया है। गांव के लोग ईमानदारी से दो रोटी कमाकर खुश थे पर आज बिजली का प्रयोग तो चाहते हैं पर बिजली का बिल नहीं देना चाहते। बैंको से पैसा तो मिल जाये पर उस का भुगतान न करना पड़े। इस के लिये हमारा यह लोकतन्त्र जिम्मेवार है जिन्होने अपने वोटों के लिये तरह तरह की सबसिडी देकर गांव वालों में मेहनत करने की आदत खत्म का दी। आज वे बिना मेहनत के सब कुछ चाहते हैं और हमारी सरकारे दे रही है। यह जो आप किसानों पर कर्ज और आत्महत्या की घटनाये पड़ते हैं ये कर्ज कृषी से जुड़े हुये नहीं होते अपितु मैरेज पैलसों में शादी, लड़को को विदेश भेजने के लिये , लड़को के नशे, कारें लेने के लिये लिये होते है। कृषि करता हुआ व्यक्ति अमीर चाहे न हां पर भूखा नहीं मर सकता जब कि सरकार उसका अनाज खरीदती है। हमारी सरकारों ने गांव वालों को न केवल निकम्मा बना दिया पर लुटेरा भी बना दिया है। आज हालत यह है कि आप गांव में रात काटते हुये भी डरते है। ऐसे में इबराहिम जैसा व्यक्ति कहानियों में ही रह गया है।

मुझे कई देशों में घूमने का अवसर मिला। पर जो काम के प्रति निष्ठा मैने चीनी और जापानी लोगों में देखी वैसी मुझे कम ही देखने को मिली। अगर व्यक्ति को आठ घटें का पागार मिलता है तो वह आठ घंटे काम ही करता है। वह सदैव अपने हुनर को सुधारने में ही लगा होता है। बस में कंडकटर नहीं होता फिर भी बस में बिना टिकट के एक भी सबारी नहीं हो सकती। यहां चार व्यक्तियों के उपर एक सुपरवाईजर बिठाना पड़ता है वरना वे काम ही नहीं करेगें। वहां ऐसा कोई सुपरवाईजर देखने को नहीं मिलेगा। अभी चण्डीगढ़ की मेयर ने बहुत सनसनीपूर्ण खुलासा किया। उन्होने बताया कि चण्डीगढ़ में जो 1000 सफाई कर्मचारी रखे गये हैं उन में 400 घर बैठे ही पागार लेते है। मैं उन्हें बताना चाहती हूं कि घर बैठे पागार नहीं मिलेगा, उन को काम करना होगा। इनके वेतन आप द्वारा दिये गये टैक्सों में से ही जातें है। यह हाल है आप द्वारा इकठठे किये गये टैक्सों का, और यह है हमारा लोकतन्त्र, जिस पर हम इतना गर्व करते है।

ऐसे में चीन हमारे से आधे मूल्य में माल बेचता है तो हम परेशान क्यों है। अच्छा होगा उन के माल का वहिष्कार करने की बजाये हम अपने में वही गुण लायें जो कि इस बिगड़े हुये लोकतन्त्र में सम्भव नहीं।

*****

निराकार ईश्वर से बातें

महात्मा आन्नद स्वामी

निराकार ईश्वर की भक्ति साकार प्रभु की पूजा करने वालों को बहुत विचित्र लगती है। वह इस बात को नहीं जानते कि जब हम निराकार ईश्वर की भक्ति करते हैं तो ईश्वर से एक तरह का वार्तालाप करते हैं। इस को वही व्यक्ति समझ सकता है जो कि ईश्वर को सर्वव्यापक व सर्वांतरयामी मानता है।

महर्षि दयानंद के इन शब्दों को सुनिये । आप को मालुम हो जायेगा कि ईश्वर वास्तव में बातें करता है। ऋर्षि सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुलास में लिखतें हैं '' ---- जब भी व्यक्ति कोई पाप अर्थात बुरा काम करने की और अग्रसर होता है तो परमात्मा की और से उसके हृदय में चार अनुभूतियां पैदा होती हैं --भय, शंका और लज्जा और आत्मा का पतन। इस के विपरीत जब वह अच्छा काम करने के लिये मन बनाता है तो जो चार अनुभूतियां पैदा होती है------वह हैं मन का प्रफ्रुलित होना, आत्मा में उत्साह और आन्नद का अनुभव और आत्मबल का बड़ना। यह जीवात्मा को सन्देश परमात्मा की और से होता है।

इस प्रकार परमात्मा भीतर से जीवात्मा को प्रेरणा देता है। यह ध्वनि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर उठती है। जो सुनने के सक्ष्म हो जाये और सुनना चाहता हो सुन लेता है। किन्तु अन्दर की ध्वनी को सुनने के लिये पहले बाहर की ध्वनी, जिन्हे विषय कहा गया है, उनको दूर करना पडता है। जब तक यह विषय---काम क्रोद्ध, लोभ, मोह, अंहकार पीछे पड़े रहेंगे अन्दर की ध्वनी नहीं सन सकती। इस बात को आप इस दृष्टांत से समझ सकेंगे,

एक कमरे में एक सज्ज्न बैठे थे। दीवार पर घड़ी लटक रही थी और लगातार चलते हुये टिक टिक कर रही थी। यह सज्जन उसकी टिक टिक को सुन रहे थे। बाहर गली में उंची आवाज में बाजे बजने लगे। उन सज्ज्न को घड़ी की टिक टिक की आवाज सुननी बन्द हो गई। भयभीत होकर उन्होने नौकर को बुलाया और कहा---देखो जरा, लगता है घड़ी चलना बन्द हो गई है। मुझे इसकी टिक टिक की ध्वनी सुनाई नहीं दे रही। नौकर ने घड़ी को देखा तो पाया कि घड़ी लगातार चल रही थी और ठीक समय बता रही थी। पर वह सब बात समझ गया और बोला---घड़ी बन्द नहीं हुई पर बाहर की आवाज इतनी अधिक है कि घड़ी की टिक टिक को सुनना मुश्किल है।

मनुष्य का मन भी तो एक कमरा है। इसके अन्दर परमात्मा की ध्वनी उस घड़ी की तरह ही लगातार टिक टिक करती है। किन्तु बाहर की इच्छाओं और वासनाओं के बाजों ने अपनी अवाज से इस ध्वनी को दबा रखा अन्दर के पट तो तब खुलें गें जब बाहर की आवाज बन्द हो।

इसलिये परमात्मा की आवाज जिवात्मा को तभी सुनाई देती है जब वह बाहर के विषयों से अपने आप को सवतन्त्र कर लेता है।

*****

'धनमेव चरित्रं'

विनोद स्वरूप, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

पैसा भगवान तो नहीं किन्तु भगवान से कम भी नहीं। लक्ष्मी का वाहन है उल्लू, धनवान व्यक्ति आवष्यकता से अधिक धन पा कर मद में अंधा हो जाता है।

'कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय,
यह खाय बौरात है वह पाए बौराये।'

धतूरे को खाने से मनुष्य मदहोष होता है किन्तु धन को प्राप्त कर लेने मात्र से नशयुक्त हो जाता है। यदि मनुष्य के पास धन का महान् संग्रह हो जाय तो यह उस के लिए अनर्थ का कारण बन जाता है। यहाँ यह कहावत चरितार्थ होती है–'टका करे टकटकात, रूपया करे उल्कापात।' धन को संभालना और उस का सदुपयोग करना भी एक कला है जो विवेकशील व्यक्ति के पास ही होती है। अनाड़ी व्यक्ति यदि धनवान बन जाय तो वह कल्याण मार्ग से भ्रष्ट हो जाता है। माया मोह में डालने वाली होती है, मोह नरक में गिराता है। इस सन्दर्भ में महर्शि कष्यप ने कहा है–'कल्याण चाहने वाला व्यक्ति अधिक धन का संग्रह न करे। महर्शि विश्वामित्र ने धन के अधिक संग्रह के सम्बन्ध में–'जैसे बारहसिंगे के सींग शरीर बढ़ने के साथ बढ़ते हैं वैसे ही धनवृद्धि के साथ–साथ तृष्णा बढ़ती जाती है और तृष्णा की कोई सीमा नहीं।' मनुष्य का षरीर वृद्धावस्था में जर्जर हो जाता है। शरीर के अंग शिथिल पड़ जाते हैं, बाल सफेद हो जाते हैं, दन्तहीन मुख पोपला हो जाता है, आंखों की नज़र कमजोर हो जाती है, सहारे के लिए हाथ में पकड़ी हुई लाठी भी कांपती है किन्तु 'तृष्णैका तरूणायते' और भी 'तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा'। हम ही तृष्णा की पूर्ति करते–करते एक दिन काल के गाल में चले जाते हैं। यह तृष्णा मनुष्य को नराधम और नरपिशाच बना देती है। धन कमाने की लालसा में मानव भले–बुरे, सुकर्म–कुकर्म, धर्म–अधर्म का कोई विचार नहीं करता। धन कमाने के लिए मनुष्य कैसे–कैसे स्वांग नहीं रचता। आये दिन समाचार–पत्रों में भ्रष्टाचार के नये–नये महाघोटालों के भण्डे फूट रहे हैं। आज का लखपति करोड़पति बनना चाहता है, करोड़पति अरबपति और अरबपति तो पूरे ब्रह्माण्ड पर ही अपना अधिपत्य जमाना चाहता है : ऐसे लोभी व्यक्तियों को यह बात भी याद रखनी चाहिए :–

इक्ट्ठे कर लो चाहे जितने हीरे मोती।
पर एक बात याद रखना, कफ़न में जेब नही होती।।

फिर भी धन की चाह निरन्तर बढ़ती ही जाती है। आज सार्वजनिक जीवन में खोटे सिक्कों का चलन इतना अधिक हो गया है कि अब अच्छे सिक्के यदि कहीं दिखाई भी देते हैं तो नकली मालूम पड़ते हैं। आज जो जितना अधिक भ्रष्ट और अपराधिक प्रवृति का व्यक्ति होगा वह उतना ही प्रतिष्ठित नेता होगा वर्तमान युग में इस का परिणाम देखिये–

'छोटे छोटे चोरों को तो सूली पर टांग देते हैं,
और बड़ो बड़ों को सार्वजनिक पदों पर बिठाते हैं।'

ऐसी स्थिति में गरीबी दूर करने का जो ढ़िंढ़ोरा पीटा जाता है वह मात्र नारा बन कर रह जाता है। गरीब–अमीर की खाई को पाटने के लिए 'गरीबी हटाओ' आन्दोलन को मुंह चिढ़ाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। कैसा भद्दा मजाक है–

रजे हुओं को खूब रजाती है ये दुनियाँ
भूखों से नज़र चुराती है ये दुनियाँ
यहाँ गरीब तरसता है दाने–दाने को,
कुत्तों को बिस्किट खिलाती है ये दुनियाँ।
अब पड़ गया पर्दा सभी कामों पर,
नोटों से दोष छुपाती है ये दुनियाँ।'

नीति के अनुसार मनुष्य के लिए चरित्र ही धन है, वही उस का साध्य है इसलिए उस की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो जीवन यापन का साधन मात्र है, इसलिए उस के पीछे भागना ठीक नहीं। धनहानि से मनुष्य की कोई बड़ी हानि नहीं होती

किन्तु चरित्र की हानि पर उसका सब कुछ चला जाता है। अंग्रेज विचारकों ने भी धन हानि को हानि नहीं माना है। 'If wealth is lost, nothing is lost' जबकि चरित्र नाष को उन्होंने सर्वनाश की संज्ञा दी है। श्प् बींतंबजमत पे सवेजए मअमतलजीपदह पे सवेजश किन्तु विज्ञान के रथ पर सवार होकर मानव सभ्यता ज्यों–ज्यों आगे बढ़ती है मानव जीवन से अध्यात्म, नीति और जीवनमूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। हमारा चिन्तन और जीवन दर्शन परमात्मा की सत्ता को नकार कर शरीर और उस की सुख सुविधाओं पर केन्द्रित होता जा रहा है। इस प्रकार धन रक्षणीय हो गया है और चरित्र उपेक्षणीय और तब उक्त स्लोगन उलट कर इस तरह हो गया है :

'If character is lost, nothing is lost,
If wealth is lost, everything is lost.

मानव जीवन और सामाजिक विकास का प्रमुख आधार होने से वित्त के महत्व को सदैव स्वीकारा गया है। राज्य का परित्याग कर के संन्यासी बन जाने वाले भर्तृहरि ने भी धन की समाज में सर्वोपरि प्रतिष्ठा को स्वीकार करते हुए लिखा है :

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पंडितः स श्रुतवान गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्षनीय सर्वेगुणा कांचनमाश्रयन्ति।

धनवान व्यक्ति निम्न कुल का होने पर भी उच्च कुल का माना जाता है, चाहे निरा मूर्ख हो किन्तु विद्वान माना जाता है। उसी की बातें सुनने योग्य होती हैं चाहे उन में कोई सार न हो, धनवान अवगुणी होने पर भी गुणवान माना जाता है। वही अच्छा वक्ता भी होता है चाहे वह असंसदीय भाषा की ही प्रयोग क्यों न करता हो। कुरूप होते हुए भी वह देखने योग्य होता है। सच है सभी गुण धन सम्पति में आश्रित हैं।

व्यक्ति में जब तक धन कमाने की शक्ति रहती है तभी तक परिवार उस से प्रेम करता है किन्तु जब वह बूढ़ा हो कर धनोपार्जन के योग्य नहीं रहता तो घर में उसे कोई नहीं पूछता। धनसंग्रह की होड़ मनुष्य को चरित्र भ्रष्ट बना देती है। धन नश्वर है, उस से पुष्ट होने वाला शरीर भी नश्वर है जब कि चरित्र अमर है चरित्र से निर्मित यश भी अमर है। तभी संत कबीर कहते हैं–

'कबीरा सो धन सांचिए जो आगे कूं होइ।
सीस चढ़ाये पोटली, ले जात न देख्या कोइ।।'

मनुष्य को अपने जीवन में ऐसे धन का संग्रह करना चाहिए जो परलोक गमन के समय उस के साथ जा सके। कबीर जी कहते हैं कि सिर पर धन की पोटली ले जाते आज तक किसी को भी नहीं देखा।

*****

Why sucide when this *Manush chola* is not easy to get

Sucide rate amongst students is on the increase. Gurbani emphasises the concept of *mann jitiya, jag jitiya*, which holds good for all. All students cannot clear entrance exams. If one fails, he/she should be taught to face the realities of life with examples of great men. The story of King Bruce and the spider is significant even now. It is not necessary that everyone should be a doctor! Society needs all kinds of people, all kinds of skills.

*****

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।
न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

ज्योतिष एवं कुंडली-मिलान की वास्तविकता

सीताराम गुप्ता

एक कन्या का विवाह न होने से उसके माता–पिता बहुत चिंतित थे। उन्होंने एक ज्योतिषी से परामर्श किया तो उसने बताया कि कन्या का विवाह अच्छे परिवार में होगा लेकिन होगा विलंब से। इसके काफी दिनों बाद कन्या का विवाह सम्पन्न हुआ। ज्योतिषी की भविष्यवाणी सच साबित हुई। इसके कुछ दिनों के बाद माता–पिता के सामने दूसरी बेटी के विवाह की समस्या आ खड़ी हुई। उन्होंने फिर उसी ज्योतिषी से परामर्श किया तो उसने बताया कि इस कन्या का विवाह भी देर से होगा लेकिन उसके कुछ दिनों के बाद फौरन ही कन्या का विवाह सम्पन्न हो गया। इस बार ज्योतिषी की भविष्यवाणी सच साबित नहीं हुई। मात्र अनुमान के आधार पर कुछ बातें सच निकलने से इस पर पूरी तरह से विश्वास नहीं किया जा सकता लेकिन आज अधिकां ा समाज इस कपोल–कल्पित विद्या के भँवर में बुरी तरह से फँसा हुआ है। भारत ही नहीं पूरी दुनिया में ज्योतिष का कोई न कोई रूप उपस्थित है और भोले–भाले लोगों के शोषण की प्रक्रिया बदस्तूर जारी है।

आज अंधविश्वास से बुरी तरह से जकड़े समाज में ज्योतिष, भविष्य–दर्शन अथवा कुंडली–मिलान पर चर्चा का आयोजन बहुत महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि इससे इन विषयों के दोनों पक्ष सामने आने की संभावना है लेकिन कटु सत्य ये है कि ये विद्याएँ मात्र अनुमान पर आधारित होने से इनका कोई औचित्य नहीं है। यदि कोई अनुमान संयोगवश सच निकल आए तो लोगों का उस पर विश्वास बढ़ जाता है और इसी विश्वास का फायदा उठाकर कुछ लोग अपने लाभ के लिए इस तथाकथित विद्या का दुरुपयोग करने लगते हैं। प्रायः कहा जाता है कि आज का नवयुवक और शिक्षित समाज इन चीज़ों को महत्त्व नहीं देता लेकिन वास्तविकता इससे भिन्न है। यदि हमारी युवा पीढ़ी और हमारा शिक्षित समाज इसे महत्त्व नहीं देता तो यह गोरख धंधा कैसे इतना फलता–फूलता? वास्तविकता ये है कि हमारी युवा पीढ़ी पहले की अपेक्षा अधिक अंधवि वास में जकड़ी हुई है। कह सकते हैं कि माता–पिता अथवा परिवार के अन्य बुजुर्ग सदस्यों की भावना के कारण वे ऐसा करने को विवश होते हैं लेकिन इसमें अंश मात्र भी सच्चाई नहीं है। फिर ग़लत बात का विरोध न करना उसका समर्थन करने जैसा ही तो है।

आज के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव ही देखने को मिलता है। विज्ञान में उनकी रुचि कम हो गई है। आज वो ऐसे विषय पढ़ना चाहते हैं जिनसे नौकरी जल्दी मिल जाती है और मोटे पैकेज भी। हमारे वैज्ञानिक एक तरफ तो उपग्रहों का सफल निर्माण और प्रक्षेपण कर रहे हैं तो दूसरी ओर अपनी सफलता के लिए मंदिरों में पूजा भी कर रहे हैं। ऐसी घटनाएँ समाज पर सीधा असर डालती हैं। हमारी युवा पीढ़ी पर इसका सीधा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण खंडित होता है। हमारी युवा पीढ़ी का मंदिरों व अन्य पूजा–स्थलों पर जाने के साथ–साथ क्लबों व जुआघरों में नियमित रूप से जाना उनकी आदत है। वह एक तरफ भोगवादी पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगी हुई है तो दूसरी ओर रूढ़िवादी परंपराओं को मानने में भी पीछे नहीं है। दोस्ती के नाम पर सारी सीमाएँ व वर्जनाएँ

टूट रही हैं। ऐसे में ज्योतिष अथवा कुंडली–मिलान का औचित्य ही क्या है?

सही अर्थों में ज्योतिष अथवा कुंडली–मिलान का कोई वैज्ञानिक आधार है ही नहीं। फिर भी यह उद्योग फल–फूल रहा है तो इसका एक प्रमुख कारण है इस तथाकथित विद्या द्वारा कुछ लोगों की आजीविका चलना। ऐसे लोगों ने ही इसे एक बड़ा बाज़ार बना दिया है। कई बार हम विवश हो जाते हैं कुछ अनर्गल चीज़ों को अपनाने के लिए। कुछ लोगों के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं है लेकिन एक फैशन अथवा दूसरों की देखा–देखी इसे करने में उन्हें कोई ऐतराज नहीं होता। कुछ ग़लत परंपराओं के विकास के लिए उनके विरुद्ध हमारा स्पष्ट दृष्टिकोण न होना भी है। उपभोक्तावाद की संस्कृति यहाँ भी हावी है। कई बार यह माफिया का रूप ले लेती है। पिछले दिनों महाराष्ट्र में अंधविश्वास के विरुद्ध काम करने वाले दाभोलकर की हत्या इस बात का प्रमाण है कि यदि हम किसी ग़लत चीज़ का विरोध कर समाज में जागृति फैलाने का प्रयास करते हैं तो निहित स्वार्थों के चलते कुछ लोग यह कतई बर्दाश्त नहीं कर सकते और इसके लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। इस सब के बावजूद कुंडली–मिलान और दूसरी बेमानी परंपराओं का निर्वाह किया जा रहा है तो इसका सीधा सा अर्थ है कि हम वास्तव में शिक्षित नहीं हुए हैं तथा हममें पॉज़िटिव एटिट्यूड व कॉमन सेंस का विकास नहीं हुआ है।

जहाँ तक कुंडली–मिलान में दांपत्य जीवन की सफलता का प्रश्न है दांपत्य जीवन की सफलता दो लोगों अथवा दो परिवारों की मानसिकता पर निर्भर करती है। यदि दोनों जीवनसाथी एक दूसरे की भावनाओं और आवश्यकताओं को समझकर उन्हें पूरा करने का प्रयास करते हैं तो जीवन की गाड़ी के सुचारु रूप से चलने में कोई बाधा नहीं हो सकती। एक तरफ विवाह रूपी पवित्र बंधन से पहले हम न जाने कितनी नाप–जोख करते हैं, एक दूसरे से अपनी वास्तविकता छुपाते हैं, कई झूठ बोलते हैं, दान–दहेज की बात करते हैं और ऊपर से सुखी वैवाहिक जीवन की लालसा में कुंडली का मिलान ज़रूर करवा लेते हैं। जहाँ तक वैवाहित जीवन की सफलता अथवा घर की सुख–शांति का प्रश्न है कई बार कुंडलियों के उत्तम मिलान के बावजूद वैवाहिक जीवन में सफलता नहीं मिल पाती और इसका स्पष्ट कारण है कि हम रिश्तों के प्रति संवेदनशीलता व जिम्मेदारी को महत्त्व न देकर कुंडलियों के मिलान को महत्त्व दे रहे हैं।

इसके विपरीत कुंडलियों का सही मिलान न होने के बावजूद प्रायः ऐसा देखा गया है कि वैवाहिक जीवन अत्यंत सफल व सुखमय होता है। मेरे पुत्र डॉ0 अमित का विवाह निश्चित हुआ तो पता चला कि कुंडली के अनुसार मेरी भावी पुत्रवधू डॉ0 सृष्टि में मांगलिक दोश है जबकि पुत्र में मांगलिक दोष नहीं है। दोनों जातकों में अपेक्षित न्यूनतम गुण भी नहीं मिलते थे। क्योंकि मैं स्वयं कुंडली–वुंडली में विश्वास नहीं करता इसलिए इस विवाह के सम्पन्न होने में कोई बाधा नहीं आई। सबसे अच्छी बात ये है कि न केवल दोनों जातकों का वैवाहिक जीवन अत्यंत माधुर्यपूर्ण एवं सफल है अपितु परिवार में चार पीढ़ियों के सदस्यों के बीच पूर्ण सामंजस्य व सौहार्द है। जीवन में विशम परिस्थितियों का आना अथवा वैचारिक विभिन्नता होना स्वाभाविक है। इनको कुंडली के मिलान से जोड़ना मात्र अंधविश्वास, अवैज्ञानिकता व अज्ञानता है।

जीवन को सार्थकता प्रदान करना है तो लव मैरिज करें अथवा अरेंज्ड मैरिज संबंधों की गरिमा का निर्वाह करना सीखें, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता व परंपरा के नाम पर एक दूसरे को छलना व ठगना बंद करें। शादियों में अनाप–शनाप खर्च व दहेज के रूप में सामान व नकदी के लेन–देन का प्रचलन बंद करें। यदि हम विवेकपूर्वक विचार करें तो यही पाते हैं कि ज्योतिषशास्त्र कोई विज्ञानसम्मत विषय नहीं अपितु मात्र एक संयोग है। कुंडली मिलान, मांगलि दोष, कालसर्प दोश व अन्य

अवधारणाएँ लोगों को बेवकूफ़ बनाकर पैसे ऐंठने अथवा ठगी का कारोबार मात्र है। इस पर विश्वास करना और इसके आधार पर कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना अंधविश्वास ही नहीं, हमारे लिए घातक भी हो सकता है। लोग शुभ मुहूर्त देखकर सब काम करते हैं तो कोर्ट की पेशी, साक्षात्कार अथवा नौकरी ज्वाइन करने के लिए क्यों नहीं शुभ मुहूर्त में ही घर से निकलते? यदि हम भुाभ मुहूर्त के चक्कर में अपेक्षित समय पर कोर्ट की पेशी, साक्षात्कार अथवा नौकरी ज्वाइन करने के लिए न जाएँ तो उसका जो परिणाम होगा आप आसानी से अंदाज़ा लगा सकते हैं।

ज्योतिष नहीं पुरुशार्थ

एक प्रसिद्ध ज्योतिषी आसपास के नैसर्गिक सौंदर्य को निहारता हुआ मस्ती में डूबा कहीं जा रहा था। अचानक वह मुख्य मार्ग से विचलित होकर एक गहरे गड्ढे में जा गिरा। वह मदद के लिए चीखने–चिल्लाने लगा। उसकी चीखने–चिल्लाने की तेज़ आवाज़ें सुनकर पास की एक झोंपड़ी में रहने वाला किसान फ़ौरन उसकी मदद करने के लिए आया और उसे गड्ढे से बाहर निकाला। गड्ढे से बाहर आकर ज्योतिषी की जान में जान आई। उसने किसान का धन्यवाद किया और कहा, ''आपने मेरी जान बचाकर मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मैं राज–ज्योतिशी और एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता हूँ। मैं लोगों का भविष्य बतलाने के बदले कम से कम पाँच स्वर्ण मुद्राएँ लेता हूँ लेकिन क्योंकि तुमने मेरी मदद की है इसलिए कल तुम मेरे घर आना और मैं बिना पाँच स्वर्ण मुद्राएँ लिए ही तुम्हारा भविष्य बतलाऊँगा।''

किसान ने कहा, '' धन्यवाद! राज–ज्योतिशी महोदय, मुझे अपना भविष्य ज्ञात है। मैं परिश्रम करके खेती–बाड़ी करता हूँ और बदले में धरती माँ मुझे अन्न से मालामाल कर देती है। मैं जानता हूँ कि यदि मैं अन्न के दाने धरती के गर्भ में नहीं बोऊँगा तो मुझे व अन्य लोगों को उदरपूर्ति करने में कठिनाई होगी। मेरा कर्म ही मेरा भविष्य है।'' ''नहीं मैं तुम्हें तुम्हारे शेष जीवन के बारे में सब कुछ बतलाऊँगा। इससे तुम भविष्य में आने वाली कठिनाइयों से परिचित होकर उनका उपाय करके शष जीवन आराम से गुज़ार सकोगे, '' राज–ज्योतिषी ने दंभपूर्वक किसान से कहा। किसान ने अत्यंत नम्रतापूर्वक कहा, ''अरे भई! जो अपने अगले क़दम के बारे में नहीं जानता और एक अंधे व्यक्ति की तरह गड्ढे में गिर पड़ता है वो भला दूसरों को कैसे कठिनाइयों से बचा सकेगा?''

किसान की सोच बिल्कुल सही थी। वास्तव में हमारा भविष्य हमारे हाथ–पैरों की लकीरों अथवा अन्य अंगों की मुद्राओं में नहीं अपितु हमारे अपने हाथों की भाक्ति अथवा पुरुषार्थ में होता है। अपने हाथों से मेहनत करके ही हम अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं। ज्योतिष द्वारा नहीं, मन को सकारात्मक दिशा में ले जाकर ही हम समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं।

क्रोध करो लेकिन उससे स्वयं का या दूसरों का अहित नहीं होना चाहिये।

एक कहानी याद आ रही है। किसी गाँव में एक साँप रहता था जो वहाँ से गुज़रने वाले लोगों को काट लेता था। लोग उससे बहुत भयभीत रहते थे। गाँव के लोगों ने अपनी समस्या एक बुद्धिमान व्यक्ति के सामने रखी। उसने साँप को बुलाकर समझाया तो वह मान गया और उसने लोगों को काटना छोड़ दिया। अब लोग साँप से डरते नहीं थे बल्कि उसके साथ खेलते थे। खेल–खेल में लोगों ने उसको तंग करना शुरू का दिया। कोई उसे अपने गले में डाल लेता तो कोई कोड़े की तरह उससे दूसरे की पिटाई करता। साँप लोगों से तंग हो गया तो एक दिन उसी बुद्धिमान व्यक्ति के पास गया जिसने उसे काटने से मना किया था।

साँप ने उस बुद्धिमान व्यक्ति को अपनी सारी व्यथा कह सुनाई। बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, ''मैंने तुझे काटने के लिए मना किया था न कि फुँफकारने के लिए। किसी को काटना बुरी बात है पर अपने बचाव के लिए फुँफकारना भी ज़रूरी है।'' इसी प्रकार क्रोध कई बार अनिवार्य होता है पर मन में उसकी तीव्रता उचित नहीं। क्रोध करो लेकिन उससे स्वयं का या दूसरों का अहित नहीं होना चाहिये। स्वयं का अहित भी बिल्कुल नहीं होना चाहिए और यह तभी संभव है जब क्रोध के प्रकटीकरण के बाद क्रोध व्यक्ति के मनोभावों में व्याप्त न रहे। मल–मूत्र व अन्य दूषित पदार्थों की तरह क्रोध को भी निकाल कर बाहर फेंक देना श्रेयस्कर है। मन में इसकी अत्यल्प मात्रा भी नुक़सान ही पहुँचाएगी।

ए.डी. 106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
मोबा0 नं0 09555622323
म्उंपस रू`तहनचजं54 / लीववण्बवण्पद

Editorial

Failed to deliver but still popular

In the last three years of NDA Government under Shri Narender Modi, though common man got no relief, rather life has become difficult for those who earn by the sweat of their brow, yet Mr. Modi's popularity remains undiminished. This unusual behavior between cause and effect merits analysis especially when we take in to account that Modi Government came in riding a wave of expectations. It is a very classic case where a leader grossly failed to deliver but still remains very popular, something not seen very often.

As I see, Mr Modi is a great thinker who works with a definite strategy to keep his image unblemished even if things do not work. His stratagem right from the beginning has been to force frequent changing in policies, slogans and goals. He is like a Film producer who makes a movie and when he gets the wind that it is a flop, immediately throws another movie, which he had kept ready for launch. By adopting this strategy he does not allow people to discuss for a long his flopped movie knowing that if his failure remains a point of discussion, it can bruise his image. The quality of the new movie hardly matters as long as it can keep his previous movie on the back burner

He started his innings with promises for creation of jobs, make in India mission, to bring back the back money stashed in foreign banks by the tax evaders and development. Having promised 100 million jobs alone in manufacturing by 2022 and to deposit Rs 15 lacs in the bank account of each citizen from the above stated black money, he was quick to realize that these proposals were not feasible. Under the situation he came out with a new script in the shape of demonetization. It indeed impressed a few for a short time, especially those who think all businessmen are corrupt, but soon it became abundantly clear that it had brought with it more problems in the form of job loss and cash strapped economy. RBI's report which says that 99% of the banned notes had come back was the last proverbial straw. Cost of demonetization far exceeded the small benefit from unearthing very modest black money. Under the situation he moved to GST. It is a indeed a good idea on paper but abnormally very high GST rates with an aim to increase direct taxes kitty, to which state government were also a party, counter reacted and it pushed up the prices of almost all common use goods. For example medicines used to be under 5% tax regime and now these are under 12% which have pushed up the prices of medicines and no more there are discounts which otherwise would be offered to the buyers. GST has in it all ingredients to make the govt. unpopular. Today crude prices are at the level of the year 2014 but retail prices of petrol and diesel are up by almost 60%, thanks to the greed for more and more taxes.

Same strategy he adopted in coining slogans When he found that jobs are not easy to come he cleverly gave a new slogan ' be a job creator and not a job seeker ' as if creating jobs was like growing jungle grass.

Mr Modi's philosophy has been to tax the people who earn by the sweat of the brow and transfer the money in the form of subsidies to those who do not want to work, which is not good for the country. To his good luck, opposition is almost non-existent with regional leaders are busy to save their own skins and the Congress party lacks inspiring & good leadership. But it the first time in last three and a half years that NDA looks weird and I can forsee not so smooth sailing in forthcoming elections to state assemblies.

All his attempts in personalized diplomacy back fired. Recall that grand welcome to Chinese President Xi jinping in Ahmedabad in 2014, sitting together on a swing at the Sabarmati Jriverfront. It looked as if both countries would work in unison in the interest of junior partner India. But, with in short time that came to naught, with China in forefront to block India in all international forums. Then came the impromptu visit to Pakistan in December 2015 to be with Pakistan's then

premier Nawaz Sharif on his daughter's wedding. What followed that visit needs no description. His personal rapport with Barack Obama ended in fiasco with Hilary unexpectedly losing tot Trump.

But, it is to his credit that he coins new and innovative things like putting a woman Nirmala Seethraman as the Defence Minister, though it is least consequential. Everyone knows that with PM like Modi around, he or she hardly matters. High profile Sushma Swaraj for all purposes is a Minister for Immigration.

When he found that jobs are not easy to come he cleverly gave a new slogan 'be a job creator and not a job seeker' as if creating jobs was like growing jungle grass.

Mr Modis restlessly remains busy doing the things one after the other with an aim to deny people the time to discuss his failures and instead adore his innovative steps like Woman Defence Minister. He keeps people tied to new problems/ issues. His other great success is that despite having not delivered he generates hope with his ideas. It is also a fact that in the last three years Voters voted more on the faith (religion) than on performance and to do it they ate bitter pill also under the influence of hardcore RSS leaders. For example now they are asking us to boycott Chinese products. It is absolutely nonsensical when we take in to consideration that today markets have opened up and we are in the global market. We are also exporting. Our IT survives on export. Then import of Chinese products has done lot of good. It has created competition to our domestic manufacturers which means better quality at lower cost. While NDA has given only heavy doze of taxes, these imports from Chins have given relief to the common man.

Still eighteen months are left for 1919 Parliamentary elections. It remains to be seen what new he can offer to keep the people hopeful. After all Emily Dickson had written in his poem---"Hope is the thing with feathers. That perches the soul. And sings the tune without words. And never stops. Even if keeps the masses hopeful without delivering, it will be an achievement since despondency is worse than disillusionment, a factor which unseated Mr Manmohan Singh.

Bhartendu Sood

*****

सम्पादकीय

बाबा गुरमीत राम रहीम की कहानी हमारे लोकतन्त्र की जीती जागती तसवीर है।

कांग्रेस भारतीय जनता पार्टी को दोष दे रही है, तो भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस पार्टी को, हमारी न्यायपालिका और आम जनता खास कर पंचकुला वाले मनोहर लाला खटटर को दोष दे रहे हैं तो खटटर साहब का कहना है कि जिस व्यक्ति के करोड़ों भक्त थे उस पर कदम फूक फूक कर लेने में कोई गलती नहीं अपितु बुद्धिमता है। खटटर साहब गलत नहीं। वे हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी व खास कर मोदी साहब द्वारा मनामनीत प्रतिनिधी है वे कोई ऐसा काम नहीं कर सकते जिस से पार्टी के जनाधार को चोट पहुंचती हो। उनको कहा गया था कि काम ऐसे करो कि न भैंस मरे न ही लाठी टूटे , हां भैंस कुछ भागती नजर आनी चाहिये चाहे फिर उसे वापिस गले से लगा कर ले आओ।

बहुत सारे जैसे की आर्य समाज है इस के लिये अंधविश्वास और अज्ञान को दोषी करार करते हैं, वे बिल्कुल सही हैं पर उन से पूछना पड़ेगा कि आप इस अंधविश्वास को खत्म करने के लिये क्या करते हो। और क्या भारत में बाबा राम रहीम ही अन्धविश्वास फैला रहा था। मेरे ख्याल में ऐसे बाबे हजारों में है यह अलग बात है कि यह बाबा कद काठ में कुछ अधिक बड़ा हो गया था। पर इस में कोई संदेह नहीं गरीबी, दास्ता और अशिक्षा और हिन्दु धर्म के अत्यन्त विकृत रूप में सैंकड़ों वर्ष रहने के बाद, हमारे देश में आम जनता अन्धविश्वासों की अधिक शिकार है और इस में पढ़ा लिखा वर्ग भी आता है। नाम और पैसा सभी को अच्छा लगता है ऐसे में ये बाबा आम जनता के अज्ञान का फायदा उठाते हैं तो हैरानगी नहीं। स्वतन्त्रता से पहले आर्य समाज ने अन्धविश्वासों के विरूध मोर्चा खोलकर अच्छा काम किया, अंग्रेज सरकार का भी सहयोग मिला। पर उस के बाद आर्य समाज वाले भी इसी रंग में रंग गये। वैसे भी मैने यह देखा है कि हम हिन्दुओं को चैन नहीं जब तक किसी बाबे की शरण न हो। कारण, ईश्वर से साक्षाक्तार का रास्ता आसान नहीं उस में तप, अनुशासन अभ्यास अपने आप में सुधार चाहिये, जो कि बाबा कि शरण में

जाने के लिये नहीं चाहिये। रिश्वत देने की तो हमें आदत है ही जब तक रिश्वत न दे दे तो यह विश्वास ही नहीं होता कि काम हो जायेगा इस लिये इन बाबों के पो बारह होते है।

फिर भी अगर कोई मुझ से पूछे कि इन बाबों के फलने फूलने के लिये दोषी कौन , तो मेरा जवाब है यह भारत का विकृत लोकतन्त्र । ऐसा लोकतन्त्र जो कि लोकतन्त्र की बहुत ही विकृत तसवीर को दर्शा रहा है। आप पूछेंगे कैसे ? तो सुनिये,

यह डेरा कोई एक दिन में एक राज्य का रूप नहीं ले गया जहां की अपनी ही करंसी थी और अपने ही कानून। मैं तो अपना ही कानून कहूंगा जब कि बाबा के पास कुछ कारों का नम्बर ही नहीं था और सड़क पर दौड़ती थी। यह सब पिछले 30 साल में तेजी से हुआ। इस बीच सभी प्रकार की सरकारें हरियाणा में आई चौटाला की पार्टी, कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी। आप क्या समझते हैं कि हमारे देश में इन्टेलिजैंस इतनी कमजोर है कि इन पार्टी के नेताओं को बाबा की करतूतों का पता नहीं था। इन्हें न केवल पता था अपितु उसके इस सम्रााज्य को इस रूप में लाने के लिये पूरा सहयोग था। आज भारतीय जनता पार्टी कहती है कि 2002 में हामारे प्रधानमन्त्री ने साधवियों की चिठठी मिलने के बाद ऐक्शन लिया। बहुत खूब आपको पता भी लग गया कि बाबा ऐसा है और फिर भी आप चुनाव के समय उसके दरवार में पेश होकर आर्शीवाद और सहयोग मांग रहे हो। पूरा सहयोग इसलिये था क्योंकि बाबा के लाखों में श्रद्धाालु हरियाणा और पंजाब दोनो प्रांतो में थे या यूं कहे की लाखों वोट थे, जिसे कि हर कोई पार्टी चाहती थी । खटटर साहब भी इतने निकम्में नही जितना ही इस काण्ड ने उन्हे प्रसुत्त किया है। वह निकम्मे बन गये हाई कमांड की हिदायत पर वोट बैंक बचाते बचाते। अब आप विपक्ष का रूख देंखें। किसी विपक्ष के नेता ने बाबा के विरूद्ध निर्णय आने के बावजूद बाबा रहीम के विरुध कुछ नहीं कहा। क्योंकि वे सभी अभी भी लाखों श्रद्धालुओं के वोटों के बारे में सोच रहें है। उनका सोचना है, बाबा अन्दर ही गया है , मरा थोड़ा ही। न जाने कब वपिस आ जाये। ऐसे तो हिन्दुस्तान में आते जाते ही रहते है। फिर श्रद्धालुआ की आस्था तो अभी भी वैसी ही है, 99 प्रतिशत के लिये तो बाबा को फंसाया गया है। फिर उन्हे वोटों से मतलव है चाहे वावा हो या बाबे का कोई उतराधिकारी।

हमारे इस लोकतन्त्र में अच्छा बडा व्यक्ति कौन है? इसका सीधा उतर है–––जिसके पास वोट हैं। इस वात से इन सभी को कुछ नहीं लेना कि उस का चरित्र क्या है। भगवान बड़ा कौन है और किस के लिये प्रांत में छुटटी की जायेगी–––जिसके श्रद्धालू है , यानी की वोटें । वह भगवान क्या था इस से किसी को कोई सरोकार नहीं। लालू यादव भ्रष्टाचार का सब से बड़ा उदाहरण है पर उस से हाथ मिलाने में किसी को सेकोच नहीं , संकोच इस लिये नहीं क्योंकि उस के पास बहुत बड़ा वोट बैक है। बिहार में शहाबूदीन जैसे हत्यारे को यह राजनितिक दल गले लगााते हैं क्योंकि उस के पास बहुत बड़ा वोट बैक है।

एक ऐसा सन्यासी जिसने 150 वर्ष पहले भारत को दास्ता की जंजीरों से बाहर आने का रास्ता दिखाया, स्वतन्त्रता का उदधोश दिया, सोई हुई हिन्दु जाति को जगाया, स्त्रियों को पशुओं जैसी हालत से बाहर निकालने के लिये शिक्षा का प्रसार किया, यह जानते हुये कि अंधविश्वास हिन्दु धर्म के दुश्मन है, अन्धविश्वासों के विरुध युद्व छेड़ा। ऐसे सन्यासी को आज हमारी राजनितिक दल और नेता बिल्कुल दूर रखते हैं , कारण वह सन्यासी जिसका नाम दयानन्द था और इन बाबों का जिनको हमारे राजनेता गले लगाते है, बहुत बड़ा शत्रु था।

मेरा मानना है कि आज जो भी हमारे समाज में बुराईयां हैं इन को जन्म देने वाला यह लोकत्न्त्र का रूप है। इसलिये बाबा राम रहीम को दोष न दे। दोष दे इस लोकतन्त्र को और इन राजनेताओं को। इस तरह के लोकतन्त्र में ये बाबा नया से नया रूप लेकर पैदा होते रहेंगे। बाबा राम रहीम न पहलें हैं न आखरी।

*****

संतुष्ट व शिष्ट व्यक्ति न केवल वह हर प्रकार की अव्यवस्था व आपाधापी से बचा रहता है अपितु उन्नति भी करता है

एक बार एक राज्य में भयंकर अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। वहीं एक छोटे से क़स्बे में एक धनी व्यक्ति रहता था जो बहुत दयालु था। उसने घोषणा की कि वह क़स्बे के सभी छोटे बच्चों को रोज़ सुबह एक–एक रोटी देगा। अगले दिन सुबह ही उसके घर के सामने रोटी लेने वाले बच्चों की भीड़ जमा हो गई। तभी रोटियां लाई गईं लेकिन सभी रोटियां एक जैसी नहीं थीं। कुछ रोटियां बड़ी थीं तो कुछ छोटी। सभी बच्चे बड़ी रोटी पाना चाहते थे इसलिए धक्का–मुक्की करने लगे सिवाय एक छोटी लड़की के। वह चुपचाप एक तरफ़ खड़ी हुई भीड़ के समाप्त होने का इंतज़ार कर रही थी। जब सब बच्चे रोटियां उठा चुके तब वह छोटी लड़की आगे आई। टोकरी में सिर्फ़ एक रोटी बची थी और वो भी सबसे छोटी। लड़की ने प्रसन्नतापूर्वक वह रोटी उठाई और रोटियां बांटनेवालों का धन्यवाद करके अपने घर चली गई।

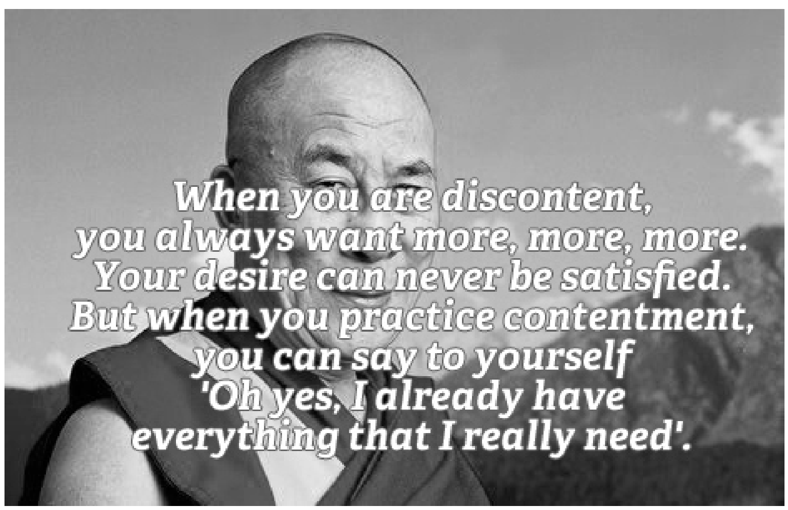

दूसरे दिन फिर रोटियां बंटीं। दूसरे दिन भी रोटियां एक जैसी न होकर छोटी–बड़ी ही थीं। बड़ी रोटी पाने के लिए फिर धक्का–मुक्की होने लगी लेकिन छोटी लड़की आज भी शांत खड़ी थी। उसने सबसे अंत में बची हुई सबसे छोटी रोटी उठाई और रोटी बांटनेवालों का धन्यवाद करके अपने घर चली गई। यह क्रम लगातार चलता रहा। हर सुबह रोटियां बंटतीं और सब बड़ी से बड़ी रोटी पाने के लिए धक्का–मुक्की करते लेकिन ये छोटी लड़की धक्का–मुक्की करना तो दूर कभी भीड़ में घुसी तक नहीं। उसका नियम बन गया था सबसे बाद में बची हुई रोटी को चुपचाप उठाना और रोटियां बांटनेवालों का धन्यवाद करके चुपचाप अपने घर चले जाना। रोटियां बांटनेवाले रोज़ लड़की का व्यवहार देखते और उसके जाने के बाद उसकी ख़ूब प्रशंसा करते। यह बात रोटियां बंटवानेवाले धनवान व्यक्ति के कानों तक भी पहुंची।

एक दिन छोटी लड़की को जो रोटी मिली वह और दिनों के मुक़ाबले में भी बहुत ही छोटी थी लेकिन लड़की ने रोज़ की तरह ही उस बहुत छोटी सी रोटी को उठाया और सबका धन्यवाद करके अपने घर चली गई। उसके चेहरे से लगता ही नहीं था कि बहुत छोटी रोटी मिलने पर उसे कोई दुख हो रहा है। वह हर रोज़ की तरह प्रसन्न दिख रही थी। घर जाकर जैसे ही लड़की ने रोटी का टुकड़ा तोड़ा उसमें से एक सोने का सिक्का निकलकर वहां ज़मीन पर जा गिरा। लड़की ने सिक्का अपनी मां को दिखलाया और पूछा कि मां इस सिक्के का क्या करूं? मां ने कहा कि करना क्या है तुम फ़ौरन वापस जाओ और रोटियां बंटवानेवाले व्यक्ति को ये सिक्का वापस करके आओ। शायद ग़लती से ये सिक्का आटे में गिर गया होगा। लड़की सोने का सिक्का लेकर भागी–भागी वापस रोटियां बंटनेवाले स्थान पर जा पहुंची।

लड़की जब रोटियां बंटवानेवाले व्यक्ति को सिक्का देने लगी तो उस व्यक्ति ने कहा कि जब सब बच्चे धक्का–मुक्की कर रहे थे तो तुम बिना परेशान हुए शांत खड़ी रहती थीं और अंत में बची हुई सबसे

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

उपयुक्त जीवन साथी

एक युवा लड़की जो कि अपने लिये बहुत ही अच्छा जीवन साथी चाहती थी, एक बजुर्ग स्त्री से पूछा––––––मुझे अपने लिये अच्छा जीवन साथी देखते देखते 3 साल हो गये पर कोई उपयुक्त युवक जिसे मैं अपने योग्य पाउं नहीं मिला। मुझे क्या करना चाहिये?

बुजुर्ग युवती ने उसे देखा औा कुछ सोचने के बाद कहा–––ऐसा करो, पास के फूलों के बाग में जाओ और जो फूल सब से खूबसूरत लगे उसे तोड़ कर ले आओ।

लड़की दूसरे दिन बापिस आई और बोली––––––मैं पूरा दिन सब से सुन्दर फूल की तलाश करती रही। पर किसी पर मन नहीं बैठ रहा था। आगे जाती रही और जब लगा कि पिछला फूल ही अच्छा था पर जब लौटकर उसे तोड़ने पहुंची तो उसे कोई और तोड़ कर ले गया था ।

तब बजुर्ग यूवती ने कहा–––अपयुक्त की यही परिभाषा है। जो सामने होता है उसकी कदर नहीं करते और जब मन बैठता है तब तक देर हो चुकी होती है। इसलिये कुछ ठीक लगे तो पकड़ लो। पूरा संसार तो किसी को भी नहीं मिलता

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

संतुष्ट व शिष्ट व्यक्ति......का शेष भाग

छोटी रोटी भी हमारा धन्यवाद करके खुशी–खुशी अपने घर ले जाती थीं अतः ये तुम्हारे संतोश व शिष्टाचार का पुरस्कार है। इस पर छोटी बच्ची ने कहा कि संतोष का पुरस्कार तो उसे तभी मिल जाता था जब चुपचाप अलग खड़े होने पर वो धक्का–मुक्की से बच जाती थी। आपकी मदद और आपका प्रेमपूर्वक व्यवहार भी मेरे लिए किसी पुरस्कार से कम नहीं है। यह बात सुनकर वह व्यक्ति बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने लड़की के माता–पिता को बुलवाया और संकट के उस विकट समय में उनकी काफी मदद की। वास्तव में जो लोग हर हाल में संतुष्ट व शिष्ट बने रहते हैं वो कभी घाटे में नहीं रहते।

एक संतुष्ट व्यक्ति अपने जीवन में कभी किसी काम में असफल नहीं होता। ऐसा व्यक्ति निरर्थक हाथ–पैर नहीं मारता अतः उसकी भाक्ति का अपव्यय भी नहीं होता जिससे वह अपने अन्य ज़रूरी काम आसानी से पूरे करने में सफल होता है। यही उन्नति का वास्तविक रहस्य है। एक संतुष्ट व्यक्ति की किसी से मुठभेड़ करने की नौबत भी नहीं आती अतः वह हर प्रकार के तनाव से बचा रहता है। तनावमुक्त व्यक्ति हर प्रकार से प्रसन्न और स्वस्थ रहता है जिससे उसकी कार्य करने की क्षमता भी बढ़ जाती है। यदि ऐसा व्यक्ति जीवन में सफलता नहीं प्राप्त करेगा तो और कौन करेगा? जहां तक शिष्ट व्यक्ति का प्रश्न है उसे कौन पसंद नहीं करेगा? एक शिष्ट व्यक्ति की सहायता करने को सभी तत्पर रहते हैं। अपने अच्छे व्यवहार के कारण ही कोई व्यक्ति हर जगह लोगों से अच्छे संबंध बनाने में सफल होता है अतः उसकी योग्यता के अनुसार काम मिलने में भी हर बाधा दूर हो जाती है। इस प्रकार से एक संतुष्ट व शिष्ट व्यक्ति न केवल वह हर प्रकार की अव्यवस्था व आपाधापी से बचा रहता है अपितु उन्नति के पर्याप्त अवसर भी उसे औरों से अधिक ही मिलते हैं।

आशा गुप्ता
ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं. 09310172323
Email : srgupta54@yahoo.co.in

*****

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् से पहले कृण्वन्तो स्वयमार्यम को चरितार्थ करें

विश्व को आर्य बनाने के नारे लगाने से अच्छा होगा हम स्वयं आर्य बने और अपने परिवार को आर्य बनायें

महेश विद्यालंकार

महर्षि दयानन्द का स्वप्न और उद्देश्य था– देश देशान्तरों में सर्वत्र वैदिक धर्म तथा भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष का प्रचार एवं प्रसार हो। महाभारत के पश्चात् ऋषि निराले महापुरुष थे, जिन्होंने देश को स्वत्व, स्वधर्म, स्वदेश, स्वसंस्कृति, स्वभाषा आदि बोध कराया। उन्होंने वैचारिक समग्रक्रान्ति का शंखनाद किया। वैदिक धर्म की जगह नाना पंथों, सम्प्रदायों, ईश्वर की जगह अनेक देवी–देवताओं तथा गुरुओं की पूजा हो रही थी। चारों ओर घोर अज्ञान, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास आदि फैला हुआ था। ऐसी परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने समस्त अवैदिक मिथ्या बातों को मिटानतथा हटाने के लिए क्रांतिकारी विचारधारा की ज्वाला प्रज्ज्वलित की जो आर्य समाज कहलाया।

आर्य समाज कोई पंथ, सम्प्रदाय व गद्दी नहीं है। इसके सभी मन्तव्य, आदर्श तथा मान्यताएं सार्वजनिक, व्यावहारिक, वैज्ञानिक तर्क, युक्ति आदि पर आधारित हैं। आर्य समाज ऋषि दयानन्द की विचारधारा, सिद्धान्तों, आदर्शों, विरासत और वसीयत का उत्तराधिकारी है। जिन उद्देश्यों एवं आदर्शों की पूर्ति के लिए ऋषि ने अनेक बार जहर पिया। पत्थर खाए, अपमान सहा, गालियां सुनीं सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करते हुए आहूत कर दिया। ऐसे महामानव का जीवन्त स्मारक आर्य समाज है। सच है कि आर्य समाज की स्थापना के बाद स्वामी जी को बहुत थोड़ा समय मिला। वे असमय में हमसे विदा हो गए। ऋषि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित पागल, दीवाने जनूनवाले अनुयायियों ने अपना घरवार, जवानी और सर्वस्व देकर, आर्य समाज को राष्ट्रीय

सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सुधारक के क्षेत्रों में बुलन्दियों पर पहुंचा दिया।

आर्य समाज के आरम्भिक काल के लोगों में तप, त्याग, सेवा, आदर्श, बलिदान, ऋषिभक्ति आदि के प्रेरक प्रसंग तथा उदाहरण पढ़ते और सुनते हैं तो हृदय श्रद्धाभक्ति की भावना से नत हो उठता है। भाव–विभोर होकर आंखें छलकने लगती हैं। आह! आर्य समाज का अतीत, कितना स्वर्णिम, गौरवपूर्ण, प्रेरक तथा आकर्षक था। चारों ओर ऋषि दयानन्द का चुम्बकीय आकर्षण तथा जादू सबके सिर पर बोल रहा था।

अतीत का जितना भी गुणगान करें, थोड़ा है। वर्तमान पर जितनी चिन्ता और प्रश्नचिन्ह? लगाएं, वे भी थोड़े हैं। मुख्यकार्य वेद प्रचार – आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्टनिर्माण तथा सत्यधर्म का प्रचार करना है। ''वेदप्रचार आर्य समाज के नाम धरोहर तथा वसीयत है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और कोई विचारधारा नहीं मानती है। वेद मन्दिर, वेद कथा वेद सम्मेलन तथा प्रातः प्रवित्र वेद मन्त्रों के द्वारा सुन्दर विधिविधान युक्त यज्ञ होता हुआ और कहीं नहीं मिलेगा। वेद सबके हैं, सबके लिए हैं और सबको पढ़ने–सुनने का अधिकार है। आर्य समाज ही है जो मिथ्या बातों का शुरू से विरोध करता रहा है। यदि आर्य समाज भी समझौतावादी और सनातनी बन गया, तो इन ताकतों को फिर से उभरने का अवसर मिलेगा। पाखण्डियों, स्वयंभू गुरुओं, महन्तों महाराजों आदि से धर्म भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर भोली–भाली जनता को लूटने से कौन बचाएगा?

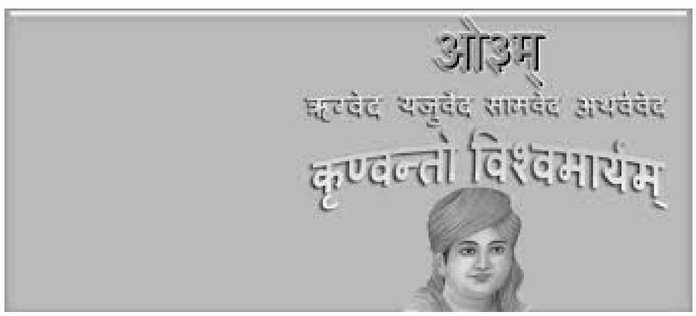

आज दुनियां में 98 प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिन्होंने न वेद देखे हैं ।वेदोद्दार के लिए आर्य समाज बनाया था। वेद ज्ञान ही संसार को मानवता और जीवन जगत् का सीधा सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकता है। वेद का चिन्तन व सन्देश सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक तथा सार्वदेशिक है। यदि भूले, भटके, संसार को कोई सुख–शान्ति एवं आनन्द का सच्चा मार्ग दिखा सकता है तो केवल मात्र वह वेदमार्ग है। आज आर्यसमाज का असली काम छूट रहा है। ये सभा, संगठन संस्थाएं, स्कूल, डी.ए.वी. आदि आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार–प्रसार मानव निर्माण तथा वेद प्रचार के लिए बनाए गए थे। जहां व्यक्ति को संस्कार, विचार और चरित्र निर्माण की शिक्षा–दीक्षा दी जाती है। आज समाज मन्दिरों में वेदाध्ययन शालाएं कोई नहीं खोल रहा है। वेद प्रचार घट रहा है। इससे जनता से सम्पर्क कट रहा है। जब से सम्पत्तियां, स्कूल, दुकानें, एफ.डी. आदि की आमदनी असली मुददे बने हैं, आर्य समाज असली उदेश्यों से अलग हो गया है। व जो आर्य समाज कभी सत्य, ईमानदारी एवं विश्वसनीयता के लिए उदाहरण बनता था। वैसी पहचान आज हमारी नहीं बन पा रही है।

आर्य समाज का उदय, झूठ, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम आदि के विरोध के लिए हुआ। इसका नारा था– जागते रहो! जागते रहो! प्रतिवर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस हमें जगाने और सम्भालने आता है। जिस उद्देश्य, कर्त्तव्य एवं प्राप्ति के लिए संस्था का निर्माण किया गया था। उस दिशा में क्या खोया और क्या पाया है कितना हम आगे बढ़े है। ऋषि ने एक स्थान पर कहा था–'यदि आर्य समाज अपने उद्देश्य को लेकर न चला तो वह भी एक सम्प्रदाय बन कर रह जाएगा और सब गड़बड़ हो जाएगा। सत्य में यही हो रहा है। आर्य समाज स्थापना दिवस हमें प्रेरित कर रहा है। आर्यों! उठो! जागो! अपने को संभालो! कुछ बनो और कुछ करो। दुनियां हमारी ओर देख रही है। आर्य समाज जैसी मातृसंस्था और ऋषि जैसा मार्गदर्शक और कहीं न मिलेगा।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् से पहले कृण्वन्तो स्वयमार्यम को चरितार्थ कर लें तो निश्चित रूप से स्थापना दिवस का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा। हम सच्चाई तथा ईमानदारी से संकल्प और व्रत लें– इदं आर्यसमाजाय इदं न मम। आर्य समाज में सेवा, त्याग, नियम, सिद्दान्त तथा अनुशासन का निर्वाह व पालन करेंगे। यही आर्य समाज स्थापना दिवस का सन्देश है। – बी.जे.–29, शालीमार बाग दिल्ली–110088?

अच्छे संस्कार का तभी फायदा है यदि हम उनके अनुसार जीवन भी काटें

उवर्शी गोयल

दूरदर्शन पर 1980 के दशक में बुनियाद नाम का एक सिरियल आया था । उसका मुख्य नायक मास्टर हवेली राम पाकीस्तान बनने से पहले लाहौर में बहुत पक्का आर्य समाजी था। उसका निजी चरित्र ही दो साल से अधिक चलने वाले इस मशहूर सिरियल की जान थी, दुनियादारी को महत्व देने वाले बाकी लोगों का एक रूख था तो हवेली राम के लिये–– सत्य सर्वोपरी है–– का अपना ही अलग दृष्टिकोण था । उसके चरित्र को ही बुनियाद कहा गया था।

हवेली राम एक व्यापारी खतरी पौराणिक परिवार में पैदा हुआ था। ऐसे परिवार में जिस में कि व्यवसाईक सफलता ही व्यक्ति की सफलता का मापदण्ड था और इस व्यवसाईक सफलता के लिये किसी भी तरह समझोते किये जा सकते थे। पर हवेली राम विद्यार्थी काल में ही आर्य समाज के सम्पर्क मे आ जाता है और आर्य समाज की विचारधारा ही उसके व्यक्तित्व को बनाती है और निखारती है। वह परिवार की इस समझोते वाली प्रथा से सख्त घृणा करता है और प्रण कर लेता है कि वह व्यापार नहीं करेगा और पढ़ लिख कर एक अध्यापक बन जाता है।

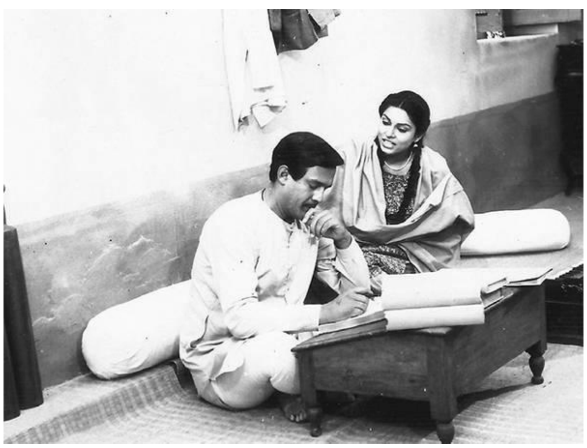

हवेली राम को पग पग पर अपने परिवार में और बाहर ऐसे लोगों का सामना करना पड़ता है जिनके जीवन में नैतिक मूल्य महत्व नहीं रखते थें । हवेली राम को भौतिक रूप में बहुत कुछ खोना पड़ता है यहां तक कि उसका अपना बड़ा भाई, पिता के वसियत करने के बाबजूद, उसे माता पिता की सम्पति से कुछ नहीं देता, पर वह इन सब की न तो परवाह करता है और न ही जो लोग उस से ऐसा करते हैं उनके साथ उसके व्यवहार में फ़र्क आता है। वह उनके साथ प्रेम ही रखता है। पर हवेली राम अपने सिद्धान्तो व मूल्यों से टस से मस नहीं होता और अपने सिद्धान्तो पर चलते हुये ही जीवन काटता है। ईश्वर उसको हर पल बचाता है और उसे हर जगह बहुत सम्मान के साथ देखा जाता है। यहां तक की मुसलमान लोग भी उसको बहुत आदर से देखते है। उसकी पहचान ही आर्य समाजी मास्टर हवेली राम थी और खास बात यह थी कि उसके चरित्र की उज्जवलता इस प्रकार फैल चुकी थी कि मास्टर हवेली राम किसी के पक्ष में गवाही दे दे तो चाहे हिन्दु हो या मुसलमान कोई उस बात पर संदेह नहीं करता था। आर्य समाजी क्या होते थे और क्या उनका चरित्र होता था, इसे जानने के लिये आज भी आप यू टयूब पर बुनियाद देख सकते हैं। जैसे रामायण की हर घटना से शिक्षा मिलती है वैसे ही उस सीरियल को देख कर पता लगता है कि अगर सही मायने में आर्य समाज के सिद्धान्तो को जीवन में अपना कर जीवन जीया जाये तो कितना सुखकारी होता है।

कहने का अर्थ है कि अच्छे मल्यों वाले संस्कार प्राप्त करना एक पहलू है पर उन मूल्यों को जीवन में बनाये रखना और किसी भी हालत में उन से समझौता न करना दूसरा। हम में ऐसे बहुत से भाग्यशाली हैं जिन्हें घर में या फिर विद्यालयों में अच्छे संस्कार मिलते है। परन्तु मेरे अनेसार हम में 5 फिसदी भी ऐसे नहीं जो उन संस्कारों को ही आर्दश बना कर जीवन काटें। जहां तक मैं समझा हूं इस का कारण है––उन संस्कारों और आर्दशों पर दृड़ विश्वास का न होना। उदाहरण के लिये सभी जगह पढ़ाया जाता है––ईमानदारी बहुत अच्छी चीज है पर जब जीवन में इसे अपनाने की बात आती है तो हम किसी भौतिक लाभ के लिये इस को त्यागने में कुछ पल भी नहीं लगाते पर हम में 5 फिसदी ऐसे भी हैं जो ऐसे मौके पर समझौता नहीं करते और उस आर्दश पर टिके रहते है। मेरा अपना अनुभव बताता है कि ऐसे व्यक्ति थोड़े समय के लिये चाहे किसी नुकसान में चले जायें पर अन्त यही है कि उनका जीवन बहुत ही शानदार और भरपूर होता है।

इस लिये सिर्फ अच्छे संस्कार प्राप्त करने से ही सब कुछ नहीं हो जाता आवश्यकता इस बात की है कि हम उन संस्कारों को आर्दश मानकर जीवन काटें। मुश्किलें आयेंगी पर समझोता न करे, कठिन परिस्थती को सहन करने क्षमता अपने में पैदा करें। यदि थोड़ी देर का दुख ही बाद में आपको सुख देगा। माता पिता के तौर पर यह हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हमारा जीवन अनुकरणिय हो। हम सभी अपने माता पिता से कुछ न कुछ अच्छा प्राप्त करतें हैं, जिसकी हम अपने तह दिल मे प्रशंसा भी करते है पर जब वही बातें अपने बच्चों को बताने की बारी आती है तो हम कई बार बिफल रहते हैं। जिन बातों ने हमें जीवन में फायदा दिया वे बच्चों को भी अवश्य दें, यह हमारा कर्तव्य बन जाता है कि वही बातें अपनों बच्चों मे भी लाये।

*****

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

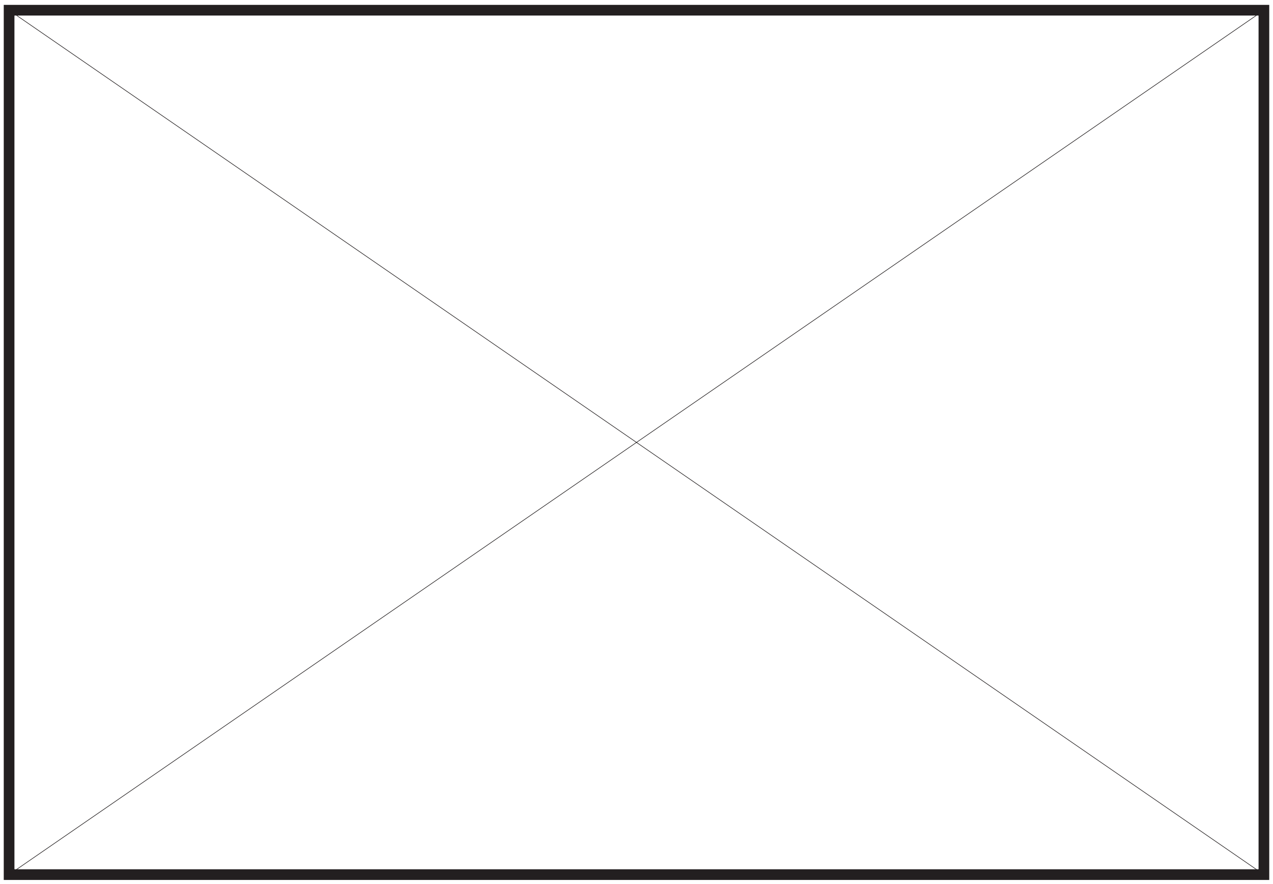

Anita Mahajan and alisha mahajan with Slum school Children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी

शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

C. L. DHAMIJA

DR AJAY GUPTA

GIAN MUNI

KUNAL BHATIA

MANOHAR LAL SONI AND OM PYARI SONI

MRS AND MR NAVNEET

MUKESH GUPTA

RUDRA DUTT RISHI

SAROJ BHARTI

SURINDER MOHAN SOOD

UMA TEJPAL M/O SURBHI RAJPAL

VINOD BALA

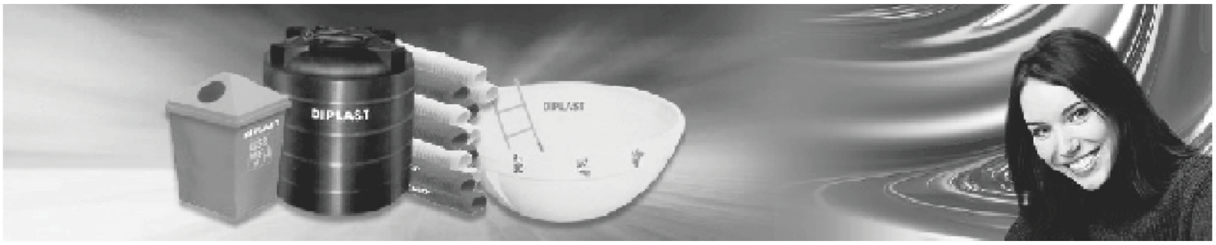

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in